मलेरिया का खात्मा अब संभव

मलेरिया का खात्मा अब बहुत तेज़ी के साथ किया जा सकता है। और वह भी धीमी गति से काम करने वाले कीटनाशियों की मदद से।

आम तौर पर विश्व स्वास्थ्य संगठन मलेरिया पर काबू पाने के लिए तेज़ गति से काम करने वाले कीटनाशियों की सलाह देता है। लेकिन ऐसे कीटनाशी मच्छरों को प्रजनन करने से पूर्व ही मार देते हैं। परिणाम यह होता है कि वही मच्छर प्रजनन कर पाते हैं जिनमें उक्त कीटनाशी के विरुद्ध प्रतिरोध क्षमता विकसित हो चुकी हो। ऐसे मच्छरों के बच्चे भी इस प्रतिरोध क्षमता से लैस होते हैं और धीरे-धीरे मच्छरों की पूरी आबादी प्रतिरोधी हो जाती है।

इस समस्या से निपटने के लिए पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के एण्ड्रयू रीड व उनके सहयोगियों ने एक नई रणनीति सुझाई है। रणनीति का मुख्य तत्व यह है कि धीमी गति से काम करने वाले कीटनाशी का उपयोग किया जाए। इससे फायदा यह होगा कि मच्छर करीब दो सप्ताह बाद मरेंगे। कहने का मतलब यह है कि सिर्फ बुज़ुर्ग मच्छरों को मारा जाएगा। इस तरह से मच्छरों को मलेरिया फैलाने से रोका जा सकेगा क्योंकि मच्छर मलेरिया परजीवी को तभी फैला सकते हैं जब ये परजीवी उनके शरीर में दो सप्ताह तक रह चुके हों।

एक फायदा यह भी होगा कि इस समय तक ये मच्छर अण्डे दे चुके होंगे। यानी प्रतिरोधी व गैर-प्रतिरोधी सारे मच्छरों को अण्डे देने का मौका बराबरी से मिलेगा। परिणाम यह होगा कि अगली पीढ़ी के मच्छरों में प्रतिरोध क्षमता में कोई वृद्धि नहीं होगी।

प्लॉस बायोलॉजी में प्रकाशित अपने शोध पत्र में रीड ने इस तरह के एक मॉडल के आधार पर बताया है कि यह तरीका लगभग प्रतिरोध-प्रूफ है। इस तरह के कुछ कीटनाशी उपलब्ध भी हैं जो मच्छरों को मारने में कई सप्ताह का समय लेते हैं। जैसे इस संदर्भ में कुछ कीटनाशी फफूंदों का अध्ययन किया भी जा रहा है। रीड मानते हैं कि मलेरिया से निपटने का यही सबसे कारगर तरीका होगा।*(स्रोत फीचर्स)*